

सुख-शांति का वास कहां हैं?

प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़,

पूर्व कुलपति, सिंधानिया विश्वविद्यालय, राजस्थान

सुख और शांति कोई बाह्य वस्तु नहीं है, जिसको बाहर खोजा जाये। बाहर की सुख और शांति दिखावटी है। आज है कल समाप्त हो जायेगी। मानव के अन्दर आत्मा का वास है। आत्मा में सुख और शांति का खजाना निहित है, किन्तु आदमी इसे न जानकर बाहर सुख और शांति को खोजता है। यह मनुष्य की मृग तृष्णा है। मृग की नाभि में कस्तूरी रहती है, किन्तु कस्तूरी की सुगंध को वह बाहर खोजता है। उसे यह ज्ञान नहीं है कि जिसे वह बाहर खोज रहा है, वह उसी के पास है। मनुष्य की भी यही गति है। ज्ञानी व्यक्ति ही इस बात को जानता है और बाह्य सुखों को त्याज्य मानकर आत्मा के अन्दर रमण करता है। इस संसार में सभी मानव सुख चाहते हैं, दुःख कोई नहीं चाहता। सुख और दुःख मानव को प्रारब्ध के अनुसार प्राप्त होते हैं।

मनुष्य जैसा कर्म करता है, उसे वैसा फल प्राप्त होता है। यदि वह अच्छा कर्म करता है, तो उसे सुख की प्राप्ति होती है और यदि बुरा कर्म करता है तो उसे दुःख की प्राप्ति होती है। सूर्य का प्रकाश सभी लोगों के लिए है। वायु सभी के लिए है। सम्पूर्ण वायुमण्डल सभी के लिए है आवश्यकता है इनके सदुपयोग की। यदि मानव त्यागपूर्वक इनका उपयोग करता है तो प्रकृति का खजाना कभी समाप्त होने वाला नहीं है। प्रकृति ने खूब दिया है। कबीरदास जी ने लिखा है—

साईं इतना दीजिए जामे कुटुम्ब समाय,

मैं भी भूखा न रहूं साधु न भूखा जाय।

अर्थात् हे ईश्वर हमें उतना दीजिए जिससे कुटुम्ब का भरण-पोषण हो जाये और द्वार पर आने वाला साधु भूखा न लौटे। इसी में सुख शांति समाहित है। जो अधिक की कामना करता है वह सदैव तनाव में रहता है, उसे सुख शांति नहीं मिल पाती। येन केन प्रकारेण बुरा कर्म

करके भी वह धन संचय का प्रयास करता है। उसे यह ज्ञात नहीं रहता कि हमें दूसरों का हक नहीं लेना है। कर्मों दण्ड सभी को भोगना पड़ता है। कर्म अपना फल अवश्य देते हैं। बिना भोगे कर्म का फल नष्ट नहीं होता। अतः मनुष्य को सदैव अच्छा कर्म ही करना चाहिए। जिससे उसका लोक और परलोक सुधरे और सुख की प्राप्ति हो।

तप मानव के आन्तरिक और बाहरी शुद्धता का साधन है। इसलिए तप का मानव जीवन में बहुत महत्व है। तप से सुख और शांति मिलती है। जिस वस्तु से हम परिचित नहीं होते उसके प्रति हमारा अनुराग नहीं होता है। अनुराग परिचित होने के बाद होता है। तप के प्रति हमारा अनुराग तभी बढ़ेगा, जब हम उससे परिचित होंगे। तप एक छोटा सा शब्द है। दो अक्षरों का, वह भी लघु अक्षरों का। इसकी शब्द रचना जितनी लघु है, इसका कार्य उतना ही महान् है। अणु से कई गुना शक्ति इसमें है। इससे अनंत-ज्ञान, अनंत-शक्ति, आत्मा का स्वरूप और परमात्म-पद प्राप्त किया जा सकता है।

प्राणियों में विद्यमान सुख-दुःख का सम्बन्ध उनके द्वारा किये गये शुभाशुभ कर्म हैं। जो व्यक्ति शुभ कर्म करता है, वह अच्छी योनि में जन्म पाता है और जो व्यक्ति कुत्सित कर्म करता है, वह निम्न योनि में जन्म लेता है। जो साधु कर्म करता है, वह साधु होता है और जो पापकर्म करता है वह पापी होता है। पुण्य कर्म से पुण्य तथा पापकर्म से पाप होता है। इस प्रकार मनुष्य के उत्थान-पतन, सुख-दुःख तथा ऐश्वर्य अनैश्वर्य का हेतु कर्म को बताया गया है। जो कर्मयोगी सत्त्व, रज और तम इन तीन गुणों से व्याप्त अपने वर्णाश्रम और परिस्थिति के अनुकूल कर्तव्य कर्म का आरम्भ करके उनको और अपने अहंता, ममता और आसक्ति, आदि भावों को परब्रह्म परमात्मा में लगा देता है, तो उन कर्मों से उसके कर्त्तापन का सम्बन्ध विच्छेद हो जाता है और ऐसे कर्म फलदायक नहीं होते। फलदायक क्रियमाण कर्मों के अभाव में उस व्यक्ति के संचित कर्म भी सर्वथा नष्ट हो जाते हैं। इस तहर कर्मों का नाश हो जाने पर वह पुरुष परमात्मतत्त्व को प्राप्त कर लेता है। परमार्थ तत्त्व की प्राप्ति से सुख शांति स्वयं प्राप्त हो जाती हैं।

समाज में सभी प्राणी एक दूसरे के साथ प्रेम से रह सकें, एक दूसरे के सुख-दुःख में हाथ बटा सकें, जिससे समाज व्यवस्था सुचारु रूप से गतिशील रहे। इन सब कारणों से मानव

सुखी रह सकता है और दूसरों को भी सुख दे सकता है। मानवीय प्रकृति सुख चाहती है। कौन नहीं चाहता कि उसका परिवार सुख से रहे। इसके लिए प्रत्येक मनुष्य का यह कर्तव्य है कि वह दूसरों के सुख से सुखी हो। सुख आंतरिक वस्तु है यदि आदमी आंतरिक रूप से सुख का अनुभव करता है, तो उसका सुख बाह्य रूप से भी प्रकट होता है। अतः मनुष्य को सदैव विधेयात्मक दृष्टिकोण रखना चाहिए।

हमारे देश के ऋषियों, मुनियों ने सुख और शांति की प्राप्ति के लिए सबकुछ त्यागकर एकांतवास में साधना की। भगवान बुद्ध, भगवान महावीर ने राजसी वैभव को त्याग दिया। आत्मतत्त्व की खोज में अनेक स्थानों पर भ्रमण किया, किन्तु जब उन्हें यह ज्ञात हुआ की सुख बाहर नहीं अन्दर ही विराजमान है तो उन्होंने उस तत्व को जानने का प्रयास किया, जहां पर सुख शांति का भण्डार है। सुख शांति का केन्द्र आत्मा है। आत्मा को जानकर उसी का उपदेश सामान्यजन के लिए किया।